Teaching of Social Science

Topic :- Simmulated Teaching or Role Playing Social skill Teaching

अनुकरणीय शिक्षण / सिमुलेशन

अध्यापक शिक्षा संस्थाओ मे शिक्षण अभ्यास (Teaching-Practice) से पूर्व पाठ-प्रदर्शन की परम्परा है। छात्राध्यापको को एक या दो पाठो का प्रदर्शन किया जाता है, उन्हे कक्षा-शिक्षण के लिए भेज दिया जाता है। छात्राध्यापक पाठ-प्रदर्शन का ही अनुकरण करने का प्रयास करते है, और अपनी मौलिक क्षमताओ का प्रयोग नही कर पाते है। उन्हे कक्षा के सामाजिक व्यवहारो का बोध नही होता, और अपेक्षित शिक्षण व्यवहार का विकास नही होता है।

अन्य व्यवसायो मे प्रशिक्षणार्थियों को पूर्व-अभ्यास मे रखा जाता है तब उन्हे अपने व्यवसाय मे कार्य करने की अनुमति दी जाती है। शिक्षण-व्यवसाय मे पूर्व-अभ्यास का अवसर नही दिया जाता है जबकि व्यावसायिक कुशलता से यह अधिक आवश्यक है। इसी पूर्व अभ्यास को अनुकरणीय शिक्षण कहते है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

* अनुकरणीय शिक्षण की धारणाएँ *

इस प्रविधि का विकास संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय मे हुआ है। इसका विकास ब्रुक शैन्क (1968) ने अध्यापक प्रशिक्षण प्रणाली के लिए किया था। इसे नाटकीय प्रविधि (Role Playing) भी कहते है।

"कार्ल अपिनशाह' तथा उनके साथियो ने शिक्षक व्यवहार के प्रारूपो का अभ्यास किया जा सकता है।

* अनुकरणीय शिक्षण का प्रारूप *

इस प्रविधि को छात्राध्यापको के शिक्षण के प्रशिक्षण के लिए प्रयुक्त किया जाता है। कक्षा-शिक्षण अभ्यास से पूर्व अनुकरणीय-शिक्षण का अभ्यास कराया जाता है। यह एक नाटकीय (Role Playing) प्रविधि मानी गयी है। छात्राध्यापक इसके अभ्यास मे शिक्षक तथा छात्र दोनो का कार्य करते है। एक छात्राध्यापक शिक्षक का कार्य करता है और अन्य छात्राध्यापक उस स्तर के छात्रो का कार्य करते है। एक छोटे प्रकरण (Topic) का शिक्षण किया जाता है। शिक्षक-कांलाश (10 अथवा 15 मि०) का होता है। उसके बाद 5 मि० शिक्षण युक्तियों के सम्बन्ध मे वाद-विवाद होता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

तथा पृष्ठपोषण का कार्य करता है और अपेक्षित व्यवहार का अनुसरण किया जाता है।

इसके निम्नलिखित सोपान है। —

⇒ प्रथम सोपान - मे छात्राध्यापको को शिक्षक के पद पर कार्य एक क्रम मे सौंपा जाता है और शेष अवसरो पर छात्र तथा निरीक्षक का कार्य सौंपा जाता है।

⇒ द्वितीय सोपान — मे उस शिक्षण कौशल को निर्धारित किया जाता है जिसका अभ्यास करना और विकास के लिए सुझाव दिये जाते है। छात्राध्यापक अपने शिक्षण के प्रकरण का चयन करते है और पाठ का नियोजन करते है।

⇒ तृतीय सोपान — मे शिक्षण के आरम्भ मे तथा अन्त करने के लिए कार्यक्रम की रूपरेखा निश्चित की जाती है।

⇒ चतुर्थ सोपान — मे शिक्षण व्यवहार की क्रियाओ के मापन की विधियो को निश्चित किया जाता है।

⇒ पंचम सोपान — मे अनुकरणीय शिक्षण का अभ्यास किया जाता है, और उन्हे पृष्ठपोषण दिया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर अभ्यास की विधि को दूसरे रूप मे बदल लिया जाता है।

⇒ षष्टम सोपान — मे शिक्षण की विधियो को बदल लिया जाता है, जिससे शिक्षण के आगामी कौशल का अभ्यास किया जा सके। परिवर्तन आवश्यक समझा जाता है, जिससे छात्राध्यापक की शिक्षण के प्रति रूचि बनी रही।

Thankyou

by
Mr. Parveen Raj
Asstt. Prof:-
B.R.C. Deoband (SRE)

Scanned with CamScanner